

डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा को जानना, सत्र 1, मीडर्स मॉडल का अवलोकन

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

ईश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबिल धर्मशास्त्र पर हमारे पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। पिछली बार हमने परिचय, विषय-सूची के बारे में बात की थी, और आपको पूरी श्रृंखला के बारे में समझने में मदद की थी। और आज हम इस जीएम 1 में व्याख्यान 1, पाठ 1 शुरू कर रहे हैं। जीएम 1, आपको यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आप अपने नोट्स पुनः प्राप्त करें।

इस बार मुख्य रूप से पावरपॉइंट स्लाइड्स होंगी। आप उन्हें पीडीएफ में या पावरपॉइंट में रख सकते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कहां हैं और आपके पास तकनीक के मामले में क्या है। लेकिन वे आपके लिए मौजूद रहेंगी और जब आप मेरी बात सुनेंगे तो आपके लिए उन्हें अपने सामने रखना महत्वपूर्ण है।

जैसा कि मैंने कहा, सीखने के लिए सिर्फ सुनने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि देखने की भी ज़रूरत है। और आप मेरी टिप्पणियों को नोट्स से जोड़ सकते हैं और मुझे लगता है कि अगर आप ऐसा करेंगे तो यह आपके लिए बहुत ज़्यादा फ़ायदेमंद होगा। ठीक है, अब यह पाठ, जैसा कि मैंने आपको पिछली स्थिति में बताया था, मेरे मॉडल के अवलोकन के बारे में है।

मैं इस स्लाइड प्रस्तुति के माध्यम से बड़ी तस्वीर देखने जा रहा हूँ। इसमें कई स्लाइड हैं। मैं इस पर बहुत समय ले सकता हूँ, लेकिन मैं ऐसा नहीं करने जा रहा हूँ।

मैं इसे जल्दी से पूरा करने जा रहा हूँ क्योंकि मैं अगले पाठों पर वापस जाऊँगा और इस अवलोकन में बताई गई हर चीज़ को कवर करूँगा, इसे और अधिक विस्तार से खोलूँगा, और उम्मीद है कि इससे आपकी समझ बढ़ेगी। तो अभी, इस पाठ में मैं केवल यही करना चाहता हूँ कि आपको मेरे मॉडल को समझने में मदद मिले। ठीक है, तो सबसे पहले, हमारी सोच के संदर्भ में परमेश्वर की इच्छा को समझने के लिए क्या आवश्यक है? खैर, इसके लिए जानने के लिए बाइबल आधारित दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

हम ईश्वर की इच्छा जानने की बात कर रहे हैं। जानना जीवन की एक श्रेणी है। यह वास्तव में एक बहुत ही बुनियादी दार्शनिक श्रेणी है।

हम ज्ञानमीमांसा शब्द का प्रयोग करते हैं। यह आपके लिए एक नया शब्द हो सकता है, लेकिन यह ग्रीक शब्द से आया है, जिसका अर्थ है जानना। दर्शनशास्त्र के परिचय में, आप ऑन्टोलॉजी के बारे में बात करेंगे।

यही है होना। मैं कौन हूँ? आप ज्ञानमीमांसा और जानने के बारे में बात करेंगे। मैं क्या जानता हूँ? मैं कैसे जानता हूँ? मेरे ज्ञान की वैधता क्या है? और आप करने के बारे में बात करेंगे।

एक्सियोलॉजी वह शब्द है, और यही वह है जो आपको जानने के परिणामस्वरूप करना चाहिए। ठीक है, तो भगवान की इच्छा जानने के लिए इसकी आवश्यकता है। इसके अलावा, इसके लिए बाइबल को पढ़ने के तरीके और बाइबल को संदर्भ में पढ़ने के तरीके के बारे में एक दृष्टिकोण की आवश्यकता है, न कि प्रमाण पाठ में।

यह एक बीमारी है। चर्च में कई बार लोग बाइबल का इस्तेमाल एक ओइजा बोर्ड की तरह करते हैं। वे बस इसे खोलकर कोई आयत ढूँढ़ लेते हैं और तब तक खोलते रहते हैं जब तक उन्हें कोई आयत न मिल जाए जिसमें वे शब्द हों जो वे सुनना चाहते हैं या उस स्थिति पर लागू होते हों जिससे वे निपट रहे हैं। लेकिन यह बाइबल का दुरुपयोग है।

हमें बाइबल को उसके संदर्भ में पढ़ने की ज़रूरत है। हमारे पास संदर्भ के रूप में पूरी बाइबल है। हमारे पास संदर्भ के रूप में शास्त्रों के कुछ भाग हैं।

हमारे पास संदर्भ के रूप में पुस्तकें हैं। इन पुस्तकों में अलग-अलग पैराग्राफ और अध्याय हैं, जिनका संदर्भ भी है। इसलिए, हमें बाइबल पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि हम बाइबल के अर्थ में रुचि रखते हैं, ताकि हमारे पास इस प्रश्न का उत्तर देने का एक वैध तरीका हो, कि मेरी विशेष स्थिति में इसका क्या अर्थ है? आपको अभिप्राय से अभिप्राय की ओर बढ़ना होगा।

तीसरा, रोमियों 12:1 और 2 परमेश्वर की इच्छा जानने के प्रश्न में एक महत्वपूर्ण अंश है। और हम इसे एक मॉडल के रूप में उपयोग करने जा रहे हैं, अपने मन के नवीनीकरण द्वारा परिवर्तित हो जाएँ। और हम इसके बारे में बात करेंगे।

हम इस बारे में भी बात करने जा रहे हैं कि विश्वदृष्टि और मूल्य मॉडल कैसे काम करते हैं क्योंकि ईश्वर की इच्छा जानने के लिए मेरे प्रतिमान का मूल यही है, विश्वदृष्टि और मूल्य मॉडल से काम करना। इसके अलावा, मैं व्यक्तिपरक चुनौतियों, विवेक, आत्मा, प्रार्थना, उद्गम और उनमें से कुछ मुद्दों का सामना करने के बारे में बात करने जा रहा हूँ। हम उन्हें अंत में कवर करेंगे, भले ही आपकी जिज्ञासा शायद शुरुआत में उनके बारे में अधिक हो।

लेकिन आप उनमें से कुछ चुनकर सुन सकते हैं। लेकिन सच तो यह है कि आपको प्रतिमान को समग्र रूप से समझने की ज़रूरत है। और इसके अलावा, प्रश्नों को समझने के लिए एक प्रणाली की ज़रूरत है।

मैं आपको कम से कम एक विचार बताऊंगा कि निर्णय कैसे लिए जाते हैं। आप जिन निर्णयों का सामना करने जा रहे हैं, उनमें से अधिकांश ऐसे निर्णय नहीं हैं जिनके बारे में बाइबल सीधे तौर पर बात करती है। यह व्याख्यान संख्या तीन या चार है, जिसमें हम बात करेंगे कि बाइबल कैसे सिखाती है।

यह प्रत्यक्ष तरीकों से सिखाता है, यह निहितार्थ द्वारा सिखाता है, और यह रचनात्मक संरचनाओं द्वारा सिखाता है जिसे हम शास्त्र की समग्रता में लाते हैं। इसलिए, मैं बाइबल और हाथ में मौजूद प्रश्न के संबंध में प्रश्नों को समझने की एक प्रणाली के बारे में बात करूँगा। इसके अलावा, इस अध्ययन का लक्ष्य क्या है? मैं आपके साथ क्या हासिल करने की उम्मीद करता हूँ? इन व्याख्यानों

को सुनने और बैठने वाले व्यक्ति के रूप में आप क्या हासिल करने की उम्मीद करते हैं? खैर, यह यहाँ है।

मुझे उम्मीद है कि आप ऐसा करेंगे, और मुझे उम्मीद है कि मैं एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करूँगा जो विचार-विमर्श में आत्म-चेतना रखता है। ये सभी शब्द भरे हुए हैं। आत्म-चेतना विचार-विमर्श।

आप जीवन के निर्णयों के बारे में बाइबल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के अनुरूप आलोचनात्मक ढंग से सोच सकते हैं। अब यह बहुत बड़ी बात है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विचार है।

यही वह है जो हम दिन के अंत में हासिल करना चाहते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप अपने निर्णयों के बारे में आत्म-जागरूक रहें। मैं चाहता हूँ कि आप सिर्फ़ व्यावहारिक रूप से निर्णय न लें।

मैं चाहता हूँ कि आप कोई निर्णय लें क्योंकि आपके पास ऐसा करने के कारण हैं और आपने इस पर विचार किया है। यह विचार-विमर्श है। भगवान ने आपको ऐसा करने के लिए बनाया है।

तो, एक आत्म-चेतन विचार-विमर्श। मैं चाहता हूँ कि आप आलोचनात्मक रूप से सोचें, जिसका संबंध काफी हद तक बाइबिल की व्याख्या से है, और बाइबिल को सिर्फ़ सतही रूप से पढ़ने की नहीं बल्कि उसे समझने के लिए उसकी जांच करने की क्षमता। और मैं चाहता हूँ कि आप जो निर्णय लेने जा रहे हैं, उसकी भी जांच करने में सक्षम हों।

दूसरे शब्दों में, आप किस पर काम कर रहे हैं? क्या आप गर्भपात, ट्रांसजेंडर, अपने लिए, अपने बच्चों के लिए शिक्षा पर काम कर रहे हैं? ये सब चीज़ें। आपको यह साबित करने में सक्षम होना चाहिए और साथ ही अपनी प्रक्रिया को भी। हम यह सब बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के अनुरूप करते हैं।

तो सबसे पहले आपको अपने दिमाग में बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को सचेत रूप से रखना होगा, सचेत रूप से नियंत्रण में रखना होगा कि आप इसे कैसे करने जा रहे हैं। अब आप कहेंगे, मैं ऐसा नहीं चाहता। यह बहुत जटिल है।

बस मुझे पाँच चीज़ें बताइए। मुझे पाँच चीज़ें बताइए जो मैं करूँ ताकि मैं एक खुश इंसान बनूँ। खैर, मेरे पास आपके लिए एक खबर है।

आप खुश हो सकते हैं, लेकिन हो सकता है कि आप जीवन जीने के तरीके और जीवन के सवालों से निपटने के तरीके में स्वस्थ न हों। दोस्तों, ईसाई धर्म, कुछ मायनों में, सभी धर्मों से ऊपर, एक मानसिक प्रक्रिया है। परमेश्वर कहता है कि प्रभु यीशु मसीह की कृपा और ज्ञान में बढ़ो।

ज्ञान शब्द और जानने की अवधारणा पूरी बाइबल में व्याप्त है। और अगर हम शब्द के विद्यार्थी नहीं हैं, जैसा कि पौलुस ने तीमुथियुस को भी बताया था, तो हम उस चीज़ से वंचित रह जाते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखी है। हम जीवन में अपने रास्ते पर नहीं चल सकते।

हम जीवन में यूँ ही किसी एक स्तंभ से टकराकर नहीं चल सकते। हमें शास्त्रों से जुड़ना चाहिए और शास्त्रों के साथ जीवन को जोड़ना चाहिए। इसलिए हमारे अध्ययन का यही लक्ष्य है।

मेरा सुझाव है कि आप इसे कार्ड पर लिखें और इसे याद रखें ताकि आप अध्ययन और जीवन के दौरान इसके बारे में सोच सकें। अब, परमेश्वर की इच्छा को समझने के लिए, सबसे पहले, बाइबिल के ज्ञानमीमांसा की आवश्यकता है। अब, याद रखें, ज्ञानमीमांसा एक ऐसा शब्द है जो जानने के मुद्दे को कवर करता है।

मैं क्या जानता हूँ? खैर, हम जो जानते हैं, उसे हम कैसे जानते हैं? यह एक अजीब सा सवाल लगता है, है न? हम जो जानते हैं, उसे हम कैसे जानते हैं? सबसे पहले, ज्ञानमीमांसा ज्ञान के स्रोतों, प्रकृति और वैधता से संबंधित है। पारंपरिक और शास्त्रीय रूप से, ज्ञान के स्रोत हमारी इंद्रियाँ, हमारी भावनाएँ, हमारी श्रवण शक्ति, हमारी दृष्टि और तर्क, किसी चीज़ से तर्कसंगत रूप से जुड़ने और उसका कारण जानने की हमारी क्षमता है। यह अधिकार से भी संबंधित है।

हम सभी लोग अपने जीवन की शुरुआत अधिकार की उस श्रेणी में ईसाई के रूप में करते हैं। हम वही करते हैं जो लोग हमें करने के लिए कहते हैं। जल्दी या बाद में, हम कह सकते हैं, मुझे यकीन नहीं है कि यह सही है, और हम शास्त्रों के पास आते हैं, और हम इसे देखते हैं।

लेकिन अधिकार ज्ञान का एक पहलू है। यह एक गौण पहलू है क्योंकि इंद्रियाँ और तर्क प्राथमिक हैं। और फिर अंतर्ज्ञान।

अंतर्ज्ञान वह नहीं है जो महिलाओं के पास होता है। आप जानते हैं, महिलाओं का अंतर्ज्ञान। अंतर्ज्ञान अनिवार्य रूप से वह डेजा वु नहीं है जिसे हम कभी-कभी जीवन में अनुभव करते हैं।

ओह, मुझे लगता है कि मैं पहले भी यहाँ आ चुका हूँ। मुझे लगता है कि मैंने पहले भी ऐसा किया है। मैंने पहले इसके बारे में कैसे सोचा? हालाँकि, दर्शनशास्त्र में, अंतर्ज्ञान पूर्वी रहस्यवाद की तरह है।

बाइबिल के विचार में, अंतर्ज्ञान रहस्योद्घाटन के बराबर होगा। भगवान ने खुद को प्रकट किया है। और यह अंतर्ज्ञान नहीं है जिस तरह से बहुत से लोग इस शब्द का उपयोग करते हैं, लेकिन यह हमारे पास मौजूद ज्ञान का स्रोत है।

और यह धर्मग्रंथों से आता है, न कि सिर्फ हमारी सोच से कि हम उस विषय को किस तरह से देखेंगे। हमें किसी ऐसी चीज़ पर जाना होगा जो ज़्यादा वस्तुनिष्ठ हो। और यह हमें अगली चीज़ पर ले जाता है।

ज्ञानमीमांसा वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक होती है। आपने किसी को कहते सुना होगा, अगर जंगल में कोई पेड़ गिर जाए और उसे सुनने वाला कोई न हो, तो क्या वह शोर करेगा? यह ज्ञान के वस्तुनिष्ठ या व्यक्तिपरक होने के सवाल की जांच करने के लिए एक क्लासिक प्राचीन ग्रीक प्रश्न है। हम ईसाई, मोटे तौर पर, ज्ञान को वस्तुनिष्ठ तरीके से लेते हैं।

तो इसका उत्तर यह है कि सृष्टि वस्तुगत है। भले ही हम वहां न हों, फिर भी यह शोर करती है। अगर आपके पास रिकॉर्डर हो और कोई इंसान वहां न हो, तो भी आप इसे सुन सकते हैं।

जबकि व्यक्तिपरक पक्ष कहता है कि वास्तविकता तब तक वास्तविकता नहीं है जब तक मैं इसका अनुभव नहीं करता। अब, यह सरल है, लेकिन यह थोड़ा सा है जिसके बारे में हम ज्ञान पर चर्चा करते समय बात करते हैं। फिर ज्ञान, पत्राचार और सुसंगतता की वैधता है।

पत्राचार में, अगर मैं टिन की छत वाले कमरे में बैठा हूँ, तो मुझे पता चल जाता है कि बारिश कब हो रही है क्योंकि मैं इसे सुन सकता हूँ। और मुझे बारिश होने का एहसास करने के लिए बाहर जाकर भीगने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि मैं छत पर बारिश की आवाज़ को अपने अनुभव के साथ जोड़ता हूँ ताकि मैं बिना देखे ही जान सकूँ कि बारिश हो रही है। चीज़ों को जानने के लिए आपको चीज़ें देखने की ज़रूरत नहीं है।

और फिर एक सुसंगति भी है जो जीवन के तर्कसंगत पक्ष और चीज़ों को तर्कपूर्ण तरीके से समझने के तरीके से अधिक संबंधित है। अब यह इस सवाल का एक बहुत ही त्वरित अवलोकन है कि हम जो जानते हैं उसे हम कैसे जानते हैं। यहाँ इसी स्लाइड पर किताबें लिखी गई हैं और मैं बस आपको इस तथ्य का स्वाद चखाना चाहता हूँ कि जानना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण मुद्दा है।

इसके बाद, आप बाइबल को उन ज्ञानमीमांसा संबंधी रिक्त स्थानों को भरने के लिए किस तरह देखते हैं? उदाहरण के लिए, स्रोतों के बारे में। खैर, हमारा स्रोत शास्त्र है। हमारा स्रोत शास्त्र है।

लेकिन हम शास्त्र को तर्क के दृष्टिकोण से और बाइबल के सुसंगत होने के दृष्टिकोण से देखते हैं। हम शास्त्र की एकता के बारे में बात करते हैं और हम शास्त्र की व्याख्या शास्त्र के साथ करते हैं। बाइबल खुद का खंडन नहीं करती है।

इसमें चीज़ों पर अलग-अलग नज़रिए होते हैं। इसलिए, जब हम शास्त्रों को समझने की कोशिश करते हैं, तो हम बहुत तर्क-वितर्क करते हैं। अंतर्ज्ञान वह भावना है जो ईश्वर ने हमें दी है।

और हम इस बारे में और बात करेंगे कि हमारा आंतरिक प्रसंस्करण उस स्रोत से संबंधित दृढ़ विश्वास के संदर्भ में कैसे काम करता है। साथ ही, प्रकृति के बारे में ज्ञानमीमांसा संबंधी रिक्त स्थान। स्रोत, प्रकृति और वैधता।

ज्ञान की प्रकृति वस्तुनिष्ठ होती है, और इसकी वैधता सुसंगतता और पत्राचार के मुद्दे और ज्ञान के सिद्धांत के संबंध में दोनों तरह से काम करती है। अब, आपको वह सब कुछ जानने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं आपको यह बताना चाहता था क्योंकि ज्ञानमीमांसा कोई सरल विषय नहीं है। यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में हमें सोचना चाहिए।

हम जो जानते हैं, उसे हम कैसे जानते हैं, हम जो जानते हैं उसकी प्रकृति क्या है, और हम जो जानते हैं उसे कैसे साबित करते हैं? यह ज्ञानमीमांसा का क्षेत्र है। हालाँकि, एक ईसाई विश्वदृष्टि में, हमारे सामने एक समस्या है क्योंकि दुनिया वास्तव में ज्ञान के स्रोतों, प्रकृति और वैधता के मॉडल पर काम करती है।

हर दार्शनिक इससे निपटता है , चाहे उनका धार्मिक रुझान कुछ भी हो, चाहे उनका दार्शनिक रुझान कुछ भी हो। नास्तिक इससे निपटते हैं। ईसाई इससे निपटते हैं।

मुसलमान इससे निपटते हैं। हिंदू इससे निपटते हैं। हर कोई इससे निपटता है।

लेकिन ईसाई विश्वदृष्टि में, हमारे विश्वदृष्टि में कुछ विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जो हमारे ज्ञान को प्रभावित करता है और यहाँ बताया गया है कि यह क्या है। यहाँ एक दुविधा है। ईश्वर को जानने में एक दुविधा है।

उदाहरण के लिए, परमेश्वर अनंत काल से अस्तित्व में है। वह आया और उसने आदम और हव्वा को बनाया, वे बगीचे में थे, शायद बहुत लंबे समय तक नहीं, और उन्होंने परमेश्वर की अवज्ञा की और हम धर्मशास्त्र में इसे पतन कहते हैं। आदम और हव्वा गिर गए।

उन्होंने पाप किया। उन्हें बगीचे से बाहर निकाल दिया गया। यही शास्त्र का महावाक्य है।

यही बड़ी कहानी है। लेकिन इसके साथ क्या होता है। जब हम ईश्वर को देखने की कोशिश करते हैं, तो हम इस तरह से देखते हैं कि मैं इस तरफ जाऊँगा, हम विकृति के माध्यम से देखते हैं।

उदाहरण के लिए, पतन ने प्रकृति में जो कुछ हम देखते हैं उसे विकृत कर दिया है। जब डेविड ने कहा कि आकाश परमेश्वर की महिमा का बखान करता है, आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को दर्शाता है। उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वह बाइबल में कही गई बातों और मूसा द्वारा कही गई बातों पर विश्वास करता था और यहूदी होने के नाते उसकी अपनी विश्वास श्रेणी के भीतर की परंपरा ने उसे ऐसा बताया था।

इस तरह से उसे पता चला कि स्वर्ग परमेश्वर की महिमा का बखान करता है। एक नास्तिक बाहर जाता है और स्वर्ग की ओर देखता है और अपनी मुट्ठी हवा में हिलाता है और कहता है, अगर तुम सच में परमेश्वर हो तो मुझे मार डालो, और कुछ नहीं होता। और इस तरह वह निष्कर्ष निकालता है कि कोई परमेश्वर नहीं है।

खैर, यह मूर्खतापूर्ण है। लेकिन सच्चाई यह है कि हमें विकृति के माध्यम से देखना होगा। और यह विकृति जटिल है क्योंकि यह केवल वह डेटा नहीं है जिसे हम देखते हैं; यह वह तरीका है जिससे हम इसे देखते हैं।

हम खुद ही विकृत हैं। धर्मशास्त्री इसे पतन का प्रभाव कहते हैं। यानी, पतन ने न केवल भूमि को प्रभावित किया बल्कि जैसा कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा था, यह होने जा रहा है, आपको हरी फलियों के बजाय कांटेदार झाड़ियाँ मिलेंगी।

आपको अपने बगीचों से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। जीवन उतना अच्छा नहीं चलेगा जितना चल सकता था। इसलिए, हमें खुद से निपटना होगा।

जैसा कि शास्त्रों में कई बार कहा गया है, हम पाप से अंधे हो गए हैं। इसलिए, इस दुविधा का परमेश्वर का समाधान यह है। और आपको 1 कुरिन्थियों 2:6-10 खोलना चाहिए।

मैं इस बारे में बाद में बात करने जा रहा हूँ, इसलिए मैं अभी इसका केवल एक सिंहावलोकन ही कर सकता हूँ। याद रखें, हम केवल एक सिंहावलोकन ही कर रहे हैं। बाइबल हमें बताती है कि 1 कुरिन्थियों 2:6-10 अध्याय 1-4 में पैक किया गया है।

2:6-10 में पौलुस ने इस बात के लिए माफ़ी मांगी है कि क्यों क्रूस का उसका संदेश सही संदेश है, श्रेष्ठ संदेश है। और पौलुस ने उन लोगों को उत्तर दिया जो उस पर दबाव डाल रहे थे कि परमेश्वर ने इसे प्रकट किया है। अध्याय 2 की आयत 10, परमेश्वर ने इसे प्रकट किया।

इसलिए पॉल एक रहस्योद्घाटन के संदर्भ में बोल रहा है, जिसमें परमेश्वर पॉल से संवाद कर रहा है और पॉल उस रहस्योद्घाटन के माध्यम से हमसे संवाद कर रहा है, जो शास्त्र में लिखा हुआ है। हमारे लिए, हमारे पास जो रहस्योद्घाटन है, वह बाइबल है, और बस इतना ही।

इसीलिए बाइबल इतनी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमारे ज्ञान का आधार है। और इसलिए, परमेश्वर ने पाप की विकृति पर विजय प्राप्त करके हमें वह संचार, शास्त्र देकर उसे जाना। और फिर भी, उसके बाद भी एक दुविधा बनी हुई है।

हमारे पास एक परिपूर्ण बाइबल है, लेकिन हमारे पास परिपूर्ण पाठक नहीं हैं। हमारे पास प्रेरित शास्त्र है, लेकिन हमारे पास प्रेरित व्याख्याकार नहीं हैं। इसलिए, हमें बाइबल पढ़ने और अध्ययन करने में भी भ्रम का सामना करना पड़ता है, और लोग अलग-अलग राय रखते हैं।

अब यह बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण का एक बड़ा, बड़ा हिस्सा है। किसी भी कारण से, परमेश्वर के आदेशों में, उसने हमें एक शास्त्र दिया है जो पर्याप्त है, लेकिन हम स्वयं कई बार इसे बाहर निकालने में सक्षम नहीं होते हैं। लेकिन हम ऐसा करने के लिए जिम्मेदार हैं।

और मुझे लगता है कि आखिरकार, भगवान ने हमें अपनी छवि में बनाया है, और उस छवि का एक हिस्सा भगवान को जानने की खोज है, हमारे निर्णयों के संबंध में शास्त्रों से काम करने की खोज है ताकि हम इसे उस तरह से कर सकें जिस तरह से भगवान चाहते हैं, जितना हम कर सकते हैं। और किसी भी कारण से, भगवान के आदेशों में, उन्होंने उस तरह से काम करने के लिए सिस्टम बनाया और हमें विविधता दी। एकता है, और विविधता है।

इसलिए, जब हमें बाइबल मिलती है, तो हम अंततः हार मान लेते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि हम बहुत आगे हैं, क्योंकि कम से कम हमारे पास बाइबल तो है। तो, दुविधा का समाधान ईश्वर ने ही किया है।

और हम 1 कुरिन्थियों 2:6-10 पर बाद में और भी बहुत कुछ देखेंगे। हमें यहाँ से आगे बढ़ना चाहिए। बस एक अवलोकन प्राप्त करना है।

तो, बाइबिल की कहानी, पतन के परिणामों के साथ, आदम और हव्वा की स्थिति है। माफ़ करें, मैं यहाँ अपने नोट्स ले रहा हूँ। उस कहानी में पतन के परिणाम बाइबिल की कहानी एक विश्वदृष्टि प्रस्तुत करती है।

देखिए, पतन हमारे विश्वदृष्टिकोण का मूल है। और रोमियों ने बताया कि पतित प्राणी होने का क्या अर्थ है। यह सुंदर नहीं है।

कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के विचारों के बारे में नहीं सोचता। हम सभी परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हैं। और एक ईसाई बनकर, परमेश्वर में विश्वासी बनकर, चाहे पुराना नियम हो या नया नियम, धर्म परिवर्तन हमें आज्ञाकारी विश्वासी बनने और परमेश्वर की इच्छा को समझने में मदद करता है।

लेकिन सच्चाई यह है कि हम अभी भी अपनी दुनिया और खुद की पतनशीलता से जूझ रहे हैं। इसलिए समझदारी के लिए इस बात को समझना ज़रूरी है। इसका हम पर क्या असर होता है, इस बारे में हम बाद में बात करेंगे।

लेकिन यही कारण है कि बाइबल आधारित विश्वदृष्टि और मूल्य ईश्वर की इच्छा को समझने के लिए मेरी प्रणाली है, क्योंकि यही एकमात्र निश्चित मार्ग है जो हमारे पास है। हमें खुद को ईश्वर की शिक्षा से जोड़ना होगा। इसलिए, ईश्वर की इच्छा को समझने के लिए सोचने के एक नए तरीके की आवश्यकता है।

यह सोचने का तरीका क्या है? इसका दोहरा समाधान है। एक तरफ, परमेश्वर ने खुद को प्रकट किया है। बाइबल परमेश्वर का वचन है।

यह ईश्वर का रहस्योद्घाटन है। इसे हम ईश्वर का स्वयं-प्रकटीकरण कहते हैं। और हमारे पास गवाही का वह पक्का वचन है, जो हमारे पैरों के लिए दीपक है।

बाइबल हमें यह बताने के लिए सभी तरह के रूपकों का इस्तेमाल करती है कि यह कितना महत्वपूर्ण है। यशायाह ने कहा, वचन और गवाही के लिए। अगर वे उसके अनुसार नहीं बोलते, तो वे परमेश्वर के नहीं हैं।

सबसे पहले, यूहन्ना ने भी लगभग यही बात कही है। इसलिए, बाइबल की पूरी कहानी में हम अपने पैर शास्त्रों में ही टिकाए हुए हैं। परमेश्वर ने खुद को प्रकट किया है।

उसने हमारे लिए उस रहस्योद्घाटन का एक रिकॉर्ड छोड़ा है, और वह समय के साथ और अधिक रिकॉर्ड पर बातचीत नहीं कर रहा है। वह रिकॉर्ड बंद हो चुका है, और हम उससे निपटने के लिए जिम्मेदार हैं। इसके अलावा, दूसरी ओर, हम उस रिकॉर्ड से बाहर निकलने और अपनी परिस्थितियों में परमेश्वर की इच्छा को समझने के लिए जिम्मेदार हैं।

यह हमारी जिम्मेदारी है। हम परिपूर्ण नहीं हैं। यह रहस्योद्घाटन है, लेकिन हम परिपूर्ण नहीं हैं।

उस तनाव के परिणामस्वरूप, हमारी ईसाई यात्रा होती है। अगर हम ईमानदार हैं, तो यह एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण यात्रा है, और इसमें विविधता है जो कभी-कभी हमें भ्रमित करती है, लेकिन हमारे पास एकता है जो मसीह में विश्वासियों और शास्त्र के अधिकार में विश्वासियों के रूप में है। और हम इसे अपने मानवीय संदर्भ में कार्यान्वित करते हैं।

रोमियों 12:1 और 2 इस सबका मूल है। इसमें क्या लिखा है? रोमियों 12, 1 और 2. इसलिए मैं आपसे अपील करता हूँ, भाइयों और बहनों। वैसे, बाइबल में, भाइयों के लिए शब्द एडेलफोर्ड है।

यह एक ग्रीक शब्द है जिसमें पति, पत्नी और बच्चे शामिल हैं और इसमें पूरा समूह शामिल है। इसलिए, भाइयों और बहनों कहना उचित है ताकि महिलाएं यहाँ खुद को अलग-थलग महसूस न करें। ईश्वर की दया से, आपको अपने शरीर को एक जीवित बलिदान के रूप में प्रस्तुत करना है, जो पवित्र और ईश्वर को स्वीकार्य है, जो आपकी आध्यात्मिक पूजा या तर्कसंगत सेवा है।

यहाँ अनुवाद में कुछ समस्याएँ हैं। इसलिए, इसमें बाइबिल के रूपक का उपयोग किया गया है: हम एक जीवित बलिदान हैं।

बलिदान ऐसा नहीं है। बलिदान मर जाते हैं। हम एक जीवित बलिदान हैं।

हम मसीह के साथ क्रूस पर चढ़े हैं, जैसा कि पॉल ने बाद में कहा। इस संसार के सदृश मत बनो। मैं तुमसे यह पूछता हूँ।

सांसारिकता क्या है? सांसारिकता का मतलब ईश्वर के विचारों के बारे में सोचना नहीं है। सांसारिकता का मतलब ईश्वर के विचारों के खिलाफ सोचना है क्योंकि यह ईश्वर का अनुसरण करने के मामले में स्वीकृत प्रक्रिया से बाहर की श्रेणी है। यही सांसारिकता है।

इसलिए इस दुनिया और इसके विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के अनुरूप मत बनो, बल्कि अपने मन को नवीनीकृत करके रूपांतरित हो जाओ। परिवर्तन एक मानसिक प्रक्रिया है। यह एक ऐसा हिस्सा है जिसके बारे में हम विस्तार से बात करने जा रहे हैं।

परीक्षण करके, आप समझ सकते हैं कि परमेश्वर की इच्छा क्या है। आप देखिए, यह अंश आपको कुछ नहीं बता रहा है। बस प्रार्थना करें, और परमेश्वर आपको बताएगा कि आपको क्या करना है। यह कहता है कि आपकी एक ज़िम्मेदारी है।

आप पर बदलाव लाने की जिम्मेदारी है। और इसका क्या मतलब है? खैर, आपको इसे समझना होगा। यह सीखने और शिक्षा का एक पहलू है।

मुझे खेद है, लेकिन मेरा चश्मा थोड़ा टेढ़ा है, इसलिए मैं उसे एडजस्ट करता रहता हूँ। यह बदलाव की एक प्रक्रिया है। उस बदलाव में, आप एक विश्वदृष्टि और मूल्य विकसित करते हैं, और फिर आप उस पूरे परिसर का उपयोग जीवन के मुद्दों का परीक्षण करने के लिए करते हैं ताकि आप समझ सकें कि ईश्वर की इच्छा क्या है।

और यह ईश्वर की इच्छा को खोजना नहीं है। विवेक, एक अर्थ में, इसे समझने का विचार है। लेकिन दिन के अंत में, हमारा विवेक शास्त्रों से जुड़ा हुआ है, शास्त्रों के बाहर किसी चीज़ से नहीं।

हम बाइबल से बाहर की जानकारी की तलाश नहीं कर रहे हैं। हम उस जानकारी से निपटना चाहते हैं जो हमारे पास पहले से है। यह ऐसा है जैसे किसी लेखक ने ईश्वर की इच्छा पर एक किताब लिखी हो, और उसमें लिखा था ईश्वर की इच्छा को खोजना, और उपशीर्षक था एक बुतपरस्त धारणा। बाइबल कभी भी आपको ईश्वर की इच्छा को खोजने के लिए नहीं कहती है।

यह बात आपको अजीब लग सकती है। बाइबल लगातार कहती है कि करो, करो, परमेश्वर की इच्छा पूरी करो। परमेश्वर की इच्छा पूरी करो।

हे परमेश्वर, कृपा करो। आज्ञाकारिता के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करो। आज्ञाकारिता एक 'करो' श्रेणी है।

और इसलिए यह एक महत्वपूर्ण बात है जिसे हम शास्त्रों के माध्यम से आगे बढ़ते हुए देखेंगे। तो, परिवर्तन, यही वह मॉडल है जिस पर हम जोर देने जा रहे हैं और आपको कई व्याख्यानों में दिखाएंगे क्योंकि हम इस सब को खोलेंगे। अब आइए अपने नोट्स में अगली स्लाइड पर चलते हैं ताकि आपको दिखाया जा सके कि वह परिवर्तनकारी मन कैसे काम करता है ताकि आपको एक बड़ी तस्वीर मिल सके।

बाईं ओर, आपके पास सभी के लिए समान है। इसका मतलब है डेटा। यह आपका डेटा पक्ष है।

दाईं ओर, उत्पाद। यही उत्पाद है। लेकिन उत्पाद कहाँ से आता है? यह मन से आता है।

अब, ध्यान दें कि मैंने मन को कैसे चित्रित किया है। मन को हृदय के रूप में चित्रित किया गया है क्योंकि व्यक्ति अपने हृदय में विश्वास करता है।

बाइबल में हृदय भावनाओं का स्थान नहीं है। स्पलंक नॉब, पेट, करुणा की आंते, यही बाइबल में भावनाओं का स्थान है। लेकिन बाइबल में हृदय यहीं है।

इसीलिए मैंने मन को हृदय के रूप में चित्रित किया। और जब आप धर्मग्रंथ पढ़ते हैं तो आपको इस बारे में सोचना चाहिए। यीशु ने कहा, हृदय से ही जीवन के मुद्दे निकलते हैं।

यह आपकी भावनाओं से नहीं है। यह आपकी सोच से है। इसलिए शास्त्रों में हृदय को मन कहा गया है।

तो, आप यहाँ से डेटा लें, इसे ग्रिड में चलाएँ, और एक उत्पाद प्राप्त करें। ठीक है, पाप शब्द को लें, पाप। यह एक ऐसा शब्द है जिसे परिभाषित किया जाना चाहिए।

ठीक है, एक नास्तिक अपने ग्रीड के माध्यम से पाप चलाता है, और वे क्या लेकर आते हैं? मूर्खता। एक धार्मिक शब्द जो आपको कुछ ऐसा बताता है जो सच नहीं है। आप एक ईसाई को लेते हैं, और आप ग्रीड के माध्यम से पाप चलाते हैं।

यह बात सामने आती है कि पाप ईश्वर की प्रकट इच्छा के विरुद्ध एक अपराध है। ठीक है, हम अपनी परिभाषाएँ यहाँ से प्राप्त करते हैं, यहाँ से नहीं, और सिर्फ यहाँ से नहीं। हमें डेटा को मान्य करना होगा क्योंकि हम इसे अपने ग्रीड के माध्यम से अपनी सोच के उत्पाद तक चलाते हैं।

यही प्रक्रिया है। हम शास्त्रों के माध्यम से ऊर्ध्वाधर रूप से रूपान्तरण करते हैं। इससे सोचने में अवरोध पैदा होता है।

हम इसके माध्यम से डेटा चलाते हैं। यह हमें एक उत्पाद देता है। इसलिए परिवर्तित मन हमारे द्वारा किए जाने वाले हर काम के मूल में है।

डेटा, मन, अर्थ। ठीक है, चलिए एक और कदम आगे बढ़ते हैं। यह परिवर्तित मन है।

विश्वदृष्टि और मूल्य क्या है? खैर, विश्वदृष्टि और मूल्य सेट। अंदाज़ा लगाइए क्या? विश्वदृष्टि और मूल्य एक ही चीज़ है। डेटा विश्वदृष्टि और मूल्य परिसर में जाता है।

आप जिस चीज़ को रूपांतरित मन से विकसित कर रहे हैं, और दूसरी तरफ़ उसका अर्थ सामने आता है। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। ठीक है, यह आदमी सड़क पर पोर्श चला रहा है और आप उसकी लाइसेंस प्लेट या बम्पर स्टिकर देखते हैं।

यह एक बम्पर स्टिकर होना चाहिए क्योंकि यह एक बड़ा स्टिकर है। जो सबसे ज़्यादा खिलौनों के साथ मरता है, वह जीतता है। यह एक विश्वदृष्टि है।

उस व्यक्ति ने अभी-अभी आपको बताया है कि आपके पास कितना पैसा है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कितने मूल्यवान हैं और जीवन में आपका क्या मतलब है। पैसा नहीं, तो कुछ नहीं। बहुत सारा पैसा, वाकई बहुत अच्छा।

जो सबसे ज़्यादा खिलौनों के साथ मरता है, वही जीतता है। यह एक विश्वदृष्टि है। अच्छा, अगर आप इस विचार को रूपांतरित दिमाग में चलाते हैं, तो क्या होता है? आप उस व्यक्ति के साथ नहीं आते जो सबसे ज़्यादा खिलौनों के साथ मरता है।

जिसके पास सबसे ज़्यादा खिलौने हैं, वह जीतता है। आप ईश्वर से प्रेम करते हैं, दूसरों की सेवा करते हैं, ईश्वर से प्रेम करते हैं और अपने पड़ोसी से प्रेम करते हैं। आप जीवन के बारे में एक बिल्कुल अलग दृष्टिकोण लेकर बाहर आते हैं।

जीवन संपत्ति के बारे में नहीं है। यह जीने के बारे में है। संपत्ति महत्वपूर्ण है।

अब्राहम के पास बहुत कुछ था। दाऊद के पास भी बहुत कुछ था। लेकिन सच्चाई यह है कि इस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

ध्यान परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता पर है। इसलिए, जब आप ईसाई बन जाते हैं तो आपके सोचने का तरीका पूरी तरह से अलग हो जाता है। यहाँ एक और उदाहरण है जो मैंने एक बार एक पादरी से सुना था।

उन्होंने कहा कि ईसाई बनने से पहले वे चीजों से प्यार करते थे और लोगों का इस्तेमाल करते थे। अब आपने भी इसका अनुभव किया है, है न? शायद मैं और आप सभी इसके दोषी हैं। चीजों से प्यार करना, लोगों का इस्तेमाल करना।

यह बाइबिल का विश्वदृष्टिकोण नहीं है। तो, बाइबिल का विश्वदृष्टिकोण क्या होगा? इतना नहीं कि वह चीजों से प्यार करे और लोगों का इस्तेमाल करे, बल्कि बाइबिल का विश्वदृष्टिकोण लोगों से प्यार करे और चीजों का इस्तेमाल करे। लोग किसी लक्ष्य को पाने का साधन नहीं हैं।

चीजें किसी लक्ष्य तक पहुँचने का साधन हैं, जो सोचने का एक बिल्कुल अलग तरीका है। हम यहाँ इसी पर काम कर रहे हैं।

हम इस पर काम कर रहे हैं कि आप कैसे सोचते हैं? और मैं आपको बता दूँ, भले ही आपको पता न हो कि आप सोच रहे हैं, फिर भी आप सोच रहे हैं और आप अभी भी यहाँ जो है उसके द्वारा संचालित हो रहे हैं, भले ही आपको इसका पता न हो। आपके पास एक विश्वदृष्टि है। आपके पास एक मूल्य प्रणाली है।

जब आप ईसाई बन जाते हैं, तो आपको इसे बदलना शुरू करना होगा। आपको दुनिया के तरीके के बजाय परमेश्वर के तरीके से खुद को ढालना शुरू करना होगा। और जब आप ऐसा करते हैं, तो आप परिपक्व होते हैं और बेहतर निर्णय लेते हैं।

दरअसल, जैसा कि किसी ने कहा है, भगवान हमारी गलतियों पर अपना काम बनाता है। वह हमें गलतियाँ करने की अनुमति देता है ताकि हम सीख सकें। और कभी-कभी हमें इसके परिणामस्वरूप अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को समायोजित करना पड़ता है।

ठीक है। परिवर्तित मन। यह क्या है? परिवर्तित मन शिक्षा की एक प्रक्रिया है।

अब, इस पर ध्यान दें। शिक्षा। यह आपकी भक्ति की प्रक्रिया नहीं है।

क्या आपने कभी सोचा है कि आप सुबह 15 से 30 मिनट तक बैठकर प्रार्थना क्यों करते हैं? आप बाहर निकलते हैं और एक घंटे बाद, आप भूल जाते हैं कि आपने क्या पढ़ा था। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आपने कुछ भी नहीं सीखा। आप बाइबल पढ़ते हैं, जो एक अच्छी आदत है।

लेकिन सिर्फ पढ़ना सीखना नहीं है। इसका क्या मतलब है? क्योंकि जब आप इसका मतलब जान लेते हैं, तो यह आप पर असर डालता है और आपको याद रहता है। शिक्षा की वह प्रक्रिया जो हमारे विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को बाइबल की शिक्षा के अनुरूप बनाती है।

यही है परिवर्तित मन। इसके अलावा, यह निर्णय लेने की प्रक्रिया की ओर ले जाता है जो कि जीवन के रोजमर्रा के संघर्ष में हमारे विश्वदृष्टिकोण और मूल्य प्रणाली की सचेत भागीदारी है। यहाँ भी, यह एक मौलिक स्लाइड है।

यह एक मौलिक कथन है जो इस पाठ्यक्रम में आपके लिए मेरे लक्ष्य के बारे में पहले बताए गए कथन से जुड़ा है। कि आप एक ऐसे व्यक्ति बन सकते हैं जो आत्म-चेतनापूर्ण विचार-विमर्श करता है। इसे भी कार्ड पर लिखा जाना चाहिए।

आपको अपने दिमाग को उस खास दिशा में ले जाने के लिए इसे बार-बार पढ़ना चाहिए। ठीक है, अब हम आगे बढ़ते हैं। तो यह है परिवर्तित मन।

तो, परिवर्तित मन का लक्ष्य क्या है? यहाँ, हम पिछले वाले से थोड़ा दोहराव पाते हैं। एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करना जो आत्म-चेतना के साथ आलोचनात्मक रूप से सोच सके। इसका मतलब है जीवन के निर्णयों के बारे में आलोचनात्मक रूप से जांच करना, जो बाइबिल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के अनुरूप हो।

तो वह छोटा सा चार्ट जो इतना सरल लगता है, वह बहुत जटिल है। यह सब उस डेटा के बारे में है जिससे हमारी दुनिया गुजर रही है। और यहाँ जो कुछ है वह उस डेटा को अर्थ देता है। अब भगवान की दुनिया में, चीजों का अर्थ होता है, बस।

आप इसे अंतरिक्ष में लटका सकते हैं और इसका अर्थ है। लेकिन हम एक इंसान और एक आस्तिक के कामकाज के बारे में बात कर रहे हैं। तो, यह मुख्य बात है।

मैं आपको यहाँ एक छोटी सी बात बताना चाहता हूँ। एक ईसाई के रूप में, जब आप लोगों को देखते हैं, तो विश्वदृष्टि के बारे में बात करें। उनसे पूछें कि आपका विश्वदृष्टिकोण क्या है।

वे नहीं जानते कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं। और आप उन्हें समझने में मदद करने की कोशिश करते हैं। आप उनकी बात सुनते हैं, और फिर आप अपना विश्वदृष्टिकोण साझा करते हैं।

और फिर उन्हें चुनौती दी जा सकती है कि कौन सा विश्वदृष्टिकोण जीवन को सबसे अच्छी तरह से समझाता है। यह गवाही देने और लोगों के साथ अपने विश्वास को साझा करने और उन्हें सोचने में मदद करने के लिए एक बढ़िया तरीका है, न कि केवल आपके दावों पर प्रतिक्रिया करने के लिए। तो अब यहाँ आगे बढ़ते हैं।

मुझे थोड़ा तेज़ी से आगे बढ़ने की ज़रूरत है। यह विशेष व्याख्यान थोड़ा लंबा है क्योंकि हम एक सिंहावलोकन प्राप्त करने के इन मुद्दों से निपट रहे हैं। इसलिए ईश्वर के तरीके से निर्णय लेना और

फिर ईश्वर की इच्छा को समझना इस बात की समझ की आवश्यकता है कि विश्वदृष्टि कैसे काम करती है।

ठीक है, हम यहाँ हैं। हम इस बारे में हमेशा से बात करते रहे हैं। इसलिए, मुझे इस पर ज़्यादा मेहनत करने की ज़रूरत नहीं है।

विश्वदृष्टि और मूल्य। विश्वदृष्टि वह मानसिक ढांचा है जिसके द्वारा हम अपनी दुनिया को समझाते हैं। वह चार्ट देखें जिसके बारे में मैंने आपको पहले ही बताया है।

आपको इस पर पकड़ बनानी होगी। इसके अलावा, मूल्य हमारे विश्वदृष्टिकोण से प्राप्त व्यक्तिगत विश्वास हैं जो हमारी सोच और कार्यों को निर्देशित करते हैं। इसलिए, विश्वदृष्टिकोण सबसे पहले आता है।

और फिर हमारे विश्वदृष्टिकोण का उत्पाद हमारे मूल्य हैं। यदि हमारा विश्वदृष्टिकोण ईश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से प्रेम करना है, तो हम यह नहीं कहते कि जो सबसे ऊँचे पंखों के साथ मरता है। हम कहते हैं कि जीवन में वास्तव में जो महत्वपूर्ण है वह ईश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से प्रेम करना है।

और इसलिए, यह हमारे लिए जीवन के बारे में सब कुछ बताता है। यह हमारा मार्गदर्शन करता है। विश्वदृष्टि और मूल्य ही हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

हर किसी का अपना विश्वदृष्टिकोण होता है। हर किसी के पास उससे निकलने वाले मूल्य होते हैं। मुझे परवाह नहीं कि आप कौन हैं।

मुझे परवाह नहीं है कि आप इस तथ्य से पूरी तरह अनजान हैं कि आपके पास ऐसी जटिलता है, लेकिन आपके पास है। और आपको इसके संपर्क में आने और इसे विकसित करने की आवश्यकता है। ठीक है, चलो यहाँ थोड़ा और सोचते हैं।

ठीक है। हम अपनी दुनिया को कैसे देखते हैं। हम अपनी दुनिया को कैसे देखते हैं? आप देखेंगे कि बीच का हिस्सा वह विश्वदृष्टि है जिसके बारे में हमने अपने दिमाग के ज़रिए कई तरह से बात की है।

लेकिन देखिए, यह शिक्षा के बारे में निर्णय लेता है। यह स्वास्थ्य सेवा, कानूनी संस्थाओं और पर्यावरण संबंधी चिंताओं के बारे में निर्णय लेता है। देखिए, हमारे पास ऐसे प्रमाण ग्रंथ नहीं हैं जो इन सभी चीज़ों को आसानी से हमारे लिए समझ सकें।

राजनीति, धार्मिक संस्थाएँ, परिवार और कलाएँ। लेकिन यह विश्वदृष्टि ही है जो जीवन की हर श्रेणी में हमारा मार्गदर्शन करती है। इसलिए, यदि आप इसके बारे में निर्णय ले रहे हैं, तो क्या मैं सार्वजनिक शिक्षा का उपयोग करूँ? क्या मैं निजी शिक्षा का उपयोग करूँ? क्या मैं होमस्कूलिंग का उपयोग करूँ? आप अपने विश्वदृष्टिकोण के माध्यम से ये निर्णय ले रहे हैं।

और आपको इस बारे में सचेत रहने और यह जानने में सक्षम होना चाहिए कि आप इसे कैसे करते हैं। चीजों की प्रकृति के बारे में उन सभी मुद्दों पर विचार करें। हमारे देश में कुछ जगहों पर, सार्वजनिक शिक्षा आधे समय ईसाइयों द्वारा दी जा रही है।

और यह विश्वदृष्टि भले ही सार्वजनिक क्षेत्र का हिस्सा न हो, फिर भी व्याप्त है। और फिर भी, कभी-कभी एक बड़ा शहर एक बच्चे के लिए रहने के लिए एक अच्छी जगह नहीं होती है, खासकर ऐसे शहर में जहाँ गैर-ईश्वरीय दृष्टिकोण का बोलबाला है, जो कि कई और अधिकांश बड़े शहरों में है। इसलिए, आपको इसके बारे में निर्णय लेना होगा।

तो हम अपनी दुनिया को इसी तरह देखते हैं। हम इसे ग्रिड के ज़रिए देखते हैं। हम इसे विश्वदृष्टि और मूल्यों की प्रक्रिया के ज़रिए देखते हैं।

इसे इस तरह से देखें। जन्म नियंत्रण, गर्भपात, लिविंग विल, वित्त और बच्चों की शिक्षा के बारे में निर्णय। यह एक तरह से दोहराव है, लेकिन यहाँ, मैंने इसे मॉडल में रखा है।

विश्वदृष्टिकोण पर गौर करें। इस तरह के सवालों के आपके जवाब आपके विश्वदृष्टिकोण और मूल्य प्रणाली का उत्पाद हैं। ठीक है।

अब आपको इस बारे में सोचना होगा क्योंकि यह सिर्फ एक अवलोकन है। मैं अपने समय के लिए जो चाहता हूँ, उससे कहीं ज़्यादा कर चुका हूँ। और इसलिए, मुझे आगे बढ़ना होगा।

याद रखें, हम इनमें से हर एक श्रेणी पर वापस आते हैं और आपकी मदद करने के लिए हम इसे थोड़ा और विस्तार से बताते हैं। लेकिन अभी, मैं चाहता हूँ कि आप पूरी तस्वीर देखें। मुझे उम्मीद है कि आप इस बात की पूरी तस्वीर देखना शुरू कर रहे हैं कि विश्वदृष्टि और मूल्यों की प्रक्रिया से ईश्वर की इच्छा को समझने का क्या मतलब है।

हमें बाइबल पढ़ना सीखना होगा। मैं यहाँ बहुत जल्दी आगे बढ़ने वाला हूँ। जब हम पुराने नियम और नए नियम में इसे देखते हैं, तो बाइबल परमेश्वर की इच्छा वाक्यांश का उपयोग कैसे करती है? परमेश्वर की इच्छा का अर्थ है इच्छा करना, प्रसन्न करना, परमेश्वर में आनंदित होना, चुनना, अनुग्रह करना, प्रेम करना, निर्धारण करना।

हम पुराने नियम और नए नियम में इस बारे में बात करेंगे। मुझे अभी इस पर विस्तार से चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन हम उस सामग्री को देखेंगे। इसके अलावा, परमेश्वर की इच्छा की भाषा का अध्ययन कई बातें प्रकट करता है।

ईश्वर की एक संप्रभु इच्छा है। हम उसे परिभाषित करेंगे। और वह हमारा क्षेत्र नहीं है।

गुप्त बातें प्रभु की हैं। जो बातें उजागर की गई हैं, वे हमारी हैं। ठीक है।

और वैसे, ध्यान दें कि यह आयत यह नहीं कहती कि आपको यह पता लगाना है कि क्या छिपा है। यह पता लगाना आपका काम नहीं है कि क्या छिपा है। आपका काम वचन का पालन करना और परमेश्वर की इच्छा पूरी करना है।

परमेश्वर की नैतिक इच्छा मानव सृष्टि के लिए परमेश्वर की इच्छाओं को प्रकट करती है। धर्मग्रंथों के माध्यम से, हमारे पास दस आज्ञाओं से लेकर निर्गमन की पुस्तक में कानून पर एक बहुत ही छोटे से खंड तक सब कुछ है। वे कानूनी संहिताएँ थीं।

उदाहरण के लिए, अगर आपके पास एक बैल है जो आपके पड़ोसी को चोट पहुँचा सकता है, तो आप इसके लिए ज़िम्मेदार हैं। अगर आपके पास एक कुत्ता है जो आपके पड़ोसी को काट सकता है, तो आप इसके लिए ज़िम्मेदार हैं। और इसलिए यह बहुत, बहुत, बहुत संक्षेप में सिखाता है।

लेकिन हमारे पास बाइबल, पुराने नियम और नए नियम की कथाएँ हैं, जो हमें बताती हैं कि परमेश्वर हमसे किस तरह का व्यवहार चाहता है। वह हमें इस संबंध में सभी तरह की कहानियाँ देता है। और वह हमें नीतिवचन भी देता है।

वह हमें भजन और कई जगहें देता है जहाँ बुद्धि की बातें सामने आती हैं। इसके बारे में बाद में और बात करेंगे। साथ ही, परमेश्वर की इच्छा के बारे में बाइबल का उपदेश भी है।

बाइबल में कहीं भी हमें परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए नहीं कहा गया है। अब हमें समझना है। हमें देखना है।

हमें अध्ययन करना होगा। हम अध्ययन करके पाते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि यह मौजूद है।

यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम स्वर्ग से प्राप्त कर सकें। इसलिए, याद रखें कि परमेश्वर की इच्छा प्रदर्शनकारी है। परमेश्वर की इच्छा कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसके बारे में आपको कहना पड़े, अच्छा, हे प्रभु, मुझे बताओ कि मुझे क्या करना है।

ठीक है। अगर आपने स्वर्ग से कोई आवाज़ सुनी है, तो वह यही होगी। मैंने आपको पहले ही बता दिया है।

काम पर लग जाओ। अपने मन को बदलो। उस बदले हुए मन को मेरे मूल्यों से जीवन के सवालों पर लागू करो।

यही वह संदेश है जो ईश्वर ने हमें दिया है। हम इसे फिर से खोलेंगे। मुझे आपको प्रक्रिया दिखाने की कोशिश करने के लिए यहाँ आगे बढ़ना है और हम इनमें से बहुत से अलग-अलग विवरणों को कवर करने जा रहे हैं।

इसलिए परमेश्वर की इच्छा के बारे में बाइबल का सावधानीपूर्वक अध्ययन हमें बाइबल को बड़े पैमाने पर पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। शास्त्र हमारे प्रश्नों को कैसे संबोधित करता है? मेरा

काम, मेरे दोस्तों, किसी प्रमाण पाठ, प्रत्यक्ष प्रमाण पाठ की तलाश करना नहीं है। और मैं किसी अन्य व्याख्यान में प्रत्यक्ष निहितार्थ और रचनात्मक निर्माणों के बारे में बात करूँगा।

इसका उद्देश्य कोई प्रमाण-पाठ खोजना नहीं है। इसका उद्देश्य कोई अर्थ खोजना है। परमेश्वर की इच्छा काफी हद तक बाइबल से ही निकलती है।

परमेश्वर मानवता के साथ कैसे पेश आता है? पतन तो होता है, लेकिन पतन से लेकर यीशु के आने तक परमेश्वर हमें मुक्ति दिलाता है। वह मानो हमारा पीछा कर रहा है। उसने भविष्यद्वक्ता भेजे।

उसने प्रेरितों को भेजा। और उसने अपने संदेशवाहकों को हमें जानकारी देने के लिए भेजा, ताकि हम उस जानकारी के ज़रिए उस तक पहुँच सकें, उसके इर्द-गिर्द नहीं, उसके अलावा नहीं, बल्कि उस जानकारी के ज़रिए। परमेश्वर की इच्छा के बारे में सावधानीपूर्वक पढ़ना हमें बाइबल को बहुत बड़े तरीकों से पढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

बाइबल पर्याप्त है। यह हमें हर चीज़ के लिए प्रमाण-पाठ नहीं देती, लेकिन यह हमें एक मानसिकता देती है जिससे हम जीवन के मुद्दों पर तर्क कर सकते हैं। अब, शिक्षण के तीन स्तर हैं।

यह बाद में एक संपूर्ण व्याख्यान होगा। प्रत्यक्ष रूप से, मैंने पहले ही निहित और रचनात्मक निर्माणों का उल्लेख किया है। प्रत्यक्ष एक आसान स्तर है।

हम धर्मग्रंथों के शिक्षण उद्देश्य को प्रदर्शित कर सकते हैं, और अधिकांश ईसाई इस पर सहमत होंगे। लेकिन फिर आप निहितार्थ स्तरों और रचनात्मक संरचनाओं पर पहुँचते हैं। मैं इसे बाद में समझाऊँगा।

और जैसे-जैसे आप नीचे से ऊपर की ओर बढ़ते हैं, आप सीधे शिक्षण से लेकर अधिक जटिल संरचनाओं जैसे कि सभी सहस्राब्दिवाद, पूर्व-सहस्राब्दिवाद, और कैल्विनवाद या आर्मिनियनवाद के क्षेत्र में चीजों तक जाते हैं, और मैं इसे सरल कहूँगा, भले ही यह जरूरी नहीं है कि यह सरल हो। वे सभी रचनात्मक संरचनाएं हैं जो शास्त्र पर आधारित हैं। वे जरूरी नहीं कि प्रमाण पाठ हों।

अब, यह आपके लिए सोचने के लिए एक बड़ा विचार है। विश्वदृष्टि और मूल्यों का विकास। परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए बाइबिल के विश्वदृष्टि और मूल्यों के विकास के लिए एक विस्तारित प्रतिमान की आवश्यकता होती है।

मैंने इसे बार-बार कहा है, है न? दोहराव सीखने की कुंजी है। यह देखते हुए कि धर्मग्रंथों में विश्वास करने वालों की पीढ़ी किस तरह विकसित हुई है, और यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण कथन आता है, एक मूल्य जमा, जब हम सत्य को प्रकट करते हैं तो एक मूल्य जमा हमें एक मॉडल देता है। हम कहानियाँ देखते हैं।

एक महान कहानी जिसके बारे में मैं आपको विस्तार से बताऊंगा, वह है लूत की कहानी और कैसे वह अब्राहम से मिले मूल्यों का उल्लंघन करने का एक आदर्श है, जो उसे मूसा के युग में धर्मग्रंथों के लिखे जाने और संहिताबद्ध होने से बहुत पहले मिला था। इसलिए, जैसे-जैसे समय बीतता है, रहस्योद्घाटन अधिक केंद्रित होता जाता है। हमारे पास कुछ आधार हैं।

फिर भजन, भविष्यवक्ता, और फिर हम यीशु तक पहुँचते हैं, और नया नियम एक तरह से अपने विकास में पुराने नियम की कई बातों को दोहराता है। लेकिन यह सब मूल्यों का विकास है। मूल्य पाने के लिए आपको किसी आदेश की आवश्यकता नहीं है।

आप विकास को देखते हैं, आप कहानियों से मूल्यों को देखते हैं, भजनकार अपनी निराशा से कैसे निपटता है, वह संघर्ष से कैसे निपटता है। ये सभी विकासशील मूल्य हैं जो हमें अपने जीवन में मार्गदर्शन करते हैं। यहीं से बुद्धि आती है।

बुद्धि आसमान से नहीं टपकती। बुद्धि मेरे लिए कोई बढ़िया विचार नहीं है। बुद्धि ऐसी चीज़ है जो बाइबल के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों से विकसित होती है।

बुद्धि वह नहीं है जो उचित है। बुद्धि वह नहीं है जो समझ में आता है क्योंकि पतित मन में, हम अपने आप में और अपने बारे में समझ नहीं पाते हैं। हम एक परिवर्तित मन के माध्यम से समझ पाते हैं कि ईश्वर ने हमें क्या सिखाया है।

हम इस पर बाद में विचार करेंगे। परमेश्वर की इच्छा चार्ट के निचले भाग में प्रकट होती है। परमेश्वर की इच्छा सर्वोपरि है।

परमेश्वर की एक नैतिक इच्छा है। और आप परमेश्वर की इच्छा को कैसे लागू करते हैं? खैर, परमेश्वर की इच्छा ईश्वरीय विवेक के माध्यम से लागू होती है। यह ईश्वरीय विवेक के माध्यम से लागू होती है।

ईश्वर की इच्छा ईश्वरीय विवेक में पाई जाती है। यह विश्वदृष्टि और मूल्यों के मुद्दे के साथ स्टिक मॉडल पर एक तरह का बदलाव है। आप देख सकते हैं कि यह शास्त्र के शिक्षण इरादे से लेकर उसके धार्मिक विश्लेषण तक कैसे चलता है।

ईश्वरीयता का मतलब है बाइबल का पालन करना, भले ही आपके पास कोई प्रमाण पाठ न हो। यह बहुत महत्वपूर्ण है। हम यहाँ फिर से इस बारे में बात करेंगे।

हम एक सर्वेक्षण कर रहे हैं। हमें एक बड़ी तस्वीर मिल रही है। ठीक है।

हम ईश्वर की इच्छा को समझने के लिए व्यक्तिपरक चुनौती का सामना करते हैं। अब हम लगभग 20 मिनट से अधिक समय तक व्याख्यान देने जा रहे हैं, जो कि मैं सामान्यतः चाहता हूँ। मैं सामान्यतः व्याख्यानों पर एक घंटे या उससे कम समय देना चाहता हूँ।

लेकिन आप देख सकते हैं कि मैं आपको पूरी कहानी बताने की कोशिश कर रहा हूँ और यह बहुत जल्दी आ रही है। लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप इस पर बार-बार विचार करेंगे ताकि आपको इसका मुख्य विचार समझ में आ जाए और फिर आप ब्रेकआउट व्याख्यान शुरू कर सकें जो मैं आपको टुकड़ों में दूंगा। व्यक्तिपरक चुनौतियाँ विवेक की चुनौती हैं, आत्मा, ईश्वरीय शक्ति और प्रार्थना की भूमिका की चुनौती।

ये कुछ बड़ी बातें हैं। और हम उनके बारे में बात करेंगे। मेरे पास ऐसे व्याख्यान हैं जो इनमें से प्रत्येक श्रेणी से संबंधित होंगे।

मैं अभी इस बारे में विस्तार से नहीं बताऊँगा। लेकिन विश्वदृष्टि और मूल्यों के मॉडल में, इन सभी बातों को ध्यान में रखा जाता है। और हम इस बारे में बात करेंगे कि उस जानकारी के संबंध में विवेक और आत्मा हमारे भीतर कैसे काम करते हैं।

ठीक है। मैं यहाँ और भी कुछ कहना चाहता था, लेकिन बाद में कहूँगा। यह सच है या झूठ? विवेक को अपना मार्गदर्शक बनाओ।

हम इस सवाल का जवाब बाद में देंगे। सच या झूठ? विवेक आपके भीतर एक स्वतंत्र इकाई है। क्या यह सच है या झूठ? विवेक मानव रचना का एक हिस्सा कैसे है? तीसरा, सच या झूठ? विवेक आवाज़ों के लिए एक खुला श्रोता कक्ष है।

शायद ईश्वर की आवाज़ हो, शायद शैतान की आवाज़ हो। आप इसे कैसे पहचानते हैं? और क्या यह एक खुला विवेक है, वैसे भी खुला दर्शक कक्ष? ये विवेक के बारे में सवाल हैं जिनके बारे में हम बात करेंगे। विवेक की विशेषताएँ।

यह आत्म-आलोचना के लिए ईश्वर द्वारा दी गई क्षमता है। ईश्वर ने हमें इस तंत्र के साथ बनाया है जिसे हम विवेक कहते हैं। और बाइबल ने नए नियम में इसे विशेष रूप से परिभाषित किया है।

यह हमारे विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों का मूल्यांकन करने का एक तंत्र है। हम इसके बारे में आपसे बाद में बात करेंगे। यह एक साक्षी है।

वह शब्द गवाह मुख्य शब्द है। विवेक उस विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली का साक्षी है जिसे हम पहचानते हैं और लागू करते हैं। जब पॉल ने ईसाइयों को सताया, संभवतः स्टीफन को पत्थर मारने के समय मौजूद था, तो पॉल ने सोचा कि वह भगवान की सेवा कर रहा था।

उसका विश्वदृष्टिकोण और मूल्य गड़बड़ा गए थे। उस समय तक उसने मसीह के साथ परमेश्वर के मार्ग को नहीं देखा था। परमेश्वर को दमिश्क के रास्ते पर पौलुस के जीवन में बाधा डालनी पड़ी और उसे बदलना पड़ा ताकि उसका विश्वदृष्टिकोण और मूल्य सही होने लगे।

और वह खुद की आलोचना करने और अपने तरीके की गलती देखने में सक्षम था। इसलिए एक अच्छे विश्वदृष्टिकोण और मूल्य प्रणाली के बिना, हमारे पास आत्म-आलोचना की सीमित क्षमता

है। अब मैं कुछ ऐसा कहने जा रहा हूँ जो आपको थोड़ा चौंका सकता है, लेकिन बहुत सारे बुरे ईसाई हैं।

चर्च में बहुत सारे प्राइमा डोना हैं। बहुत स्वार्थ है। बहुत अधिक अधिकारपूर्ण नियंत्रण है।

जो लोग खुद को नहीं जानते। नेतृत्व करने के बजाय शासन करना। नेतृत्व करना शासन करने से बहुत अलग बात है।

और आपके विश्वदृष्टिकोण को आप तक पहुंचना होगा। और अगर आपका विश्वदृष्टिकोण गड़बड़ है, तो आपको लगेगा कि आप सही काम कर रहे हैं। लेकिन बाइबल को आप तक बेहतर तरीके से पहुंचने और आपको यह समझने में मदद करने की ज़रूरत है कि आप सही जगह पर नहीं हैं।

यह उस विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली का साक्षी है जिसे हम पहचानते हैं और लागू करते हैं। यही विवेक है। यह एक मॉनीटर है।

यह कोई न्यायाधीश नहीं है। बाइबल गवाह शब्द का प्रयोग करती है। एक गवाह आपको बताता है कि वह क्या देखता है।

अंतरात्मा विश्वदृष्टि और मूल्यों को देखती है और आपको इसके बारे में बताती है। यह कोई न्यायाधीश नहीं है। यह आपको विश्वदृष्टि और मूल्य नहीं देता है।

और मैं बाद में आपको इसके बारे में विस्तार से बताऊंगा। पवित्र आत्मा एक और चीज़ है जो आपके मन में बहुत सारे सवाल खड़े करेगी। सच या झूठ।

पवित्र आत्मा की भूमिका बाइबल की जानकारी को अतिरिक्त सामग्री के साथ पूरक बनाना है। मैं इसका उत्तर बाद में दूंगा। सच या झूठ।

रोशनी एक ऐसा शब्द है जिसका अक्सर इस्तेमाल किया जाता है। यह कोई बहुत बढ़िया शब्द नहीं है, लेकिन इसका इस्तेमाल किया जाता है। यह बाइबल की सही व्याख्या प्रदान करने का परमेश्वर का तरीका है।

हम इस बारे में बाद में बात करेंगे। मैं अभी आपको बताता हूँ। यही बात ईश्वरीय कृपा के बारे में भी सच है।

हम जी.एम. 13 में प्रोविडेंस पर एक पूरा व्याख्यान देंगे। इसके अलावा, हम प्रार्थना के बारे में बात करेंगे। प्रार्थना यहाँ एक चुनौती है, और यह एक और व्यक्तिपरक क्षेत्र है।

यह जी.एम. 14 में बाद में बताया गया है। ठीक है, तो परमेश्वर की इच्छा को समझने के लिए एक ऐसी प्रणाली की आवश्यकता है जो आपके विश्वदृष्टि ढांचे के भीतर बाइबिल के ज्ञान को संसाधित करती है। यह डेटा, मानसिकता और अर्थ का सरल सा आरेख है।

लेकिन यह बहुत बड़ी बात है, है न? मेरा मतलब है, हमें खुद के बारे में जागरूक होना होगा। एक कवि ने कहा कि एक कवि जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता, उसने भी एक ऐसा कथन कहा जो बिलकुल सच है। बिना जांचे-परखे जीवन जीने लायक नहीं है।

और मुझे यह कहते हुए खेद है कि बहुत से ईसाइयों ने कभी भी खुद की और जीवन के साथ अपने व्यवहार की जांच नहीं की है। उन्होंने धर्मग्रंथों की जांच नहीं की है और यह नहीं देखा है कि वे धर्मग्रंथों से कैसे संबंधित हैं और वे जीवन को कैसे जीते हैं। वे जीवन को हेरफेर करते हैं।

वे जीवन के मुद्दों से निपटने के बजाय लोगों को हेरफेर करते हैं। ठीक है, उस सिस्टम को उस चार्ट में सिर्फ एक प्रतिनिधित्व द्वारा दर्शाया गया है। आप स्लाइड से इसकी एक बड़ी कॉपी बनाना चाहेंगे, एक पूर्ण आकार का पेज।

हम बाद में इस पर विस्तार से चर्चा करेंगे। मैं जो समय चाहता था, वह अब बहुत, बहुत, बहुत, बहुत कम हो गया है। मुझे पता था कि इस विशेष स्लाइड सेट के संबंध में इसमें थोड़ा अधिक समय लगेगा, लेकिन मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है।

और मुझे पता है कि हम बहुत तेजी से आगे बढ़े, लेकिन आपके पास नोट्स हैं। आप व्याख्यान को एक-दो बार सुन सकते हैं। यह केवल एक घंटे का है।

आप इसे समय के अलग-अलग खंडों में विभाजित कर सकते हैं जो आपके पास उपलब्ध हो। बड़ी तस्वीर, परिवर्तित मन के बड़े बिंदु और उससे आने वाली मूल्य प्रणाली को समझने की कोशिश करें ताकि जब हम इसे तोड़ें, तो आपको पता चले कि यह समग्र प्रतिमान में कहाँ फिट बैठता है। खैर, सुनने के लिए धन्यवाद।

माफ़ करें, मेरी आवाज़ थोड़ी कर्कश हो रही है। मैं हाल ही में कक्षा में नहीं पढ़ा रहा हूँ, इसलिए मैं यहाँ पढ़ा रहा हूँ। यह थोड़ा चुनौतीपूर्ण हो गया है।

तो यहाँ आने के लिए आपका धन्यवाद। सुनने के लिए आपका धन्यवाद। कृपया अपनी गति से जारी रखें, लेकिन यह आपके लिए यहीं है, आपके लिए सुविधाजनक है, और आपके सोचने के लिए बहुत सारी जानकारी है।

तो आपको पहले पेज पर नोट्स में मेरी संपर्क जानकारी मिल जाएगी। मेरे पास एक ईमेल है जिससे आप संवाद कर सकते हैं। मैंने अपनी वेबसाइट का भी उल्लेख किया है जिससे आप काम कर सकते हैं।

और जब आपके पास प्रश्न हों, तो मैं उनसे बातचीत करके बहुत खुश हूँ। याद रखें, कभी-कभी सोशल मीडिया, फ़ोन और यहाँ तक कि कंप्यूटर भी आने वाली चीज़ों के बारे में निर्णय ले लेते हैं और उन्हें कूड़ेदान में फेंक देते हैं या उन्हें ऐसी जगह फेंक देते हैं जहाँ उन्हें नहीं होना चाहिए। और इसलिए अगर आपने कोई प्रश्न पूछने के बाद मुझसे कोई जवाब नहीं सुना है, तो फिर से प्रयास करें, क्योंकि कभी-कभी यह वहाँ चला जाता है जहाँ मैं नहीं देख पाता।

ठीक है, तो भगवान आपको आशीर्वाद दें। हमने जिन चीज़ों के बारे में बात की है, उनके संबंध में अपना प्रार्थना समय रखें, और मैं आपको अगले खंड में व्याख्यान GM2 में देखूँगा। धन्यवाद।